किसी समय में

मत्स्येन्द्र शुक्ल

मत्स्येन्द्र शुक्ल घटनाओं के कवि न होकर मूल्यों के प्रति सतत् आस्थावान बने रहने वाले कवि हैं। इनकी कविताओं में राजनीतिक उछल-कूद का चित्रण कम है बल्कि सामाजिक जीवन-दर्शन तथा समय के कटु अनुभवों की अभिव्यक्ति अधिक है। कवि के समाजविषयक अनुभव संघर्ष, आस्था जिजीविषा, प्रेम, न्याय तथा स्वतंत्रता जैसे मूल्यों को प्रभावी ढंग से उजागर करते हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि मूल्यों की कविता सतह के नीचे छिपी सच्चाइयों को पहचानने की एक अन्तर्दृष्टि प्रदान करती है। यही वह कारण है जो पाठकों से धैर्य की माँग करता है और विवेक को क्रमशः प्रभावित कर उनके मन में उचित स्थान बना लेता है। मत्स्येन्द्र इस सच्चाई से विधिवत परिचित हैं। वह कविता को दिशाहीन संघर्ष से उबार कर एक नयी मंजिल की ओर ले जाने में सफल हुए हैं। कविता की रक्षा जीवन की रक्षा है। यदि जीवन को सही मार्ग नहीं प्रदान किया जाय तो कविता आगे चलकर जीवन से इस कदर कट जाती है कि फिर वापस लाना रचनाकार के लिए बहुत कठिन हो जाता है। कवि त्रिलोचन की भाँति मत्स्येन्द्र की कविता व्यवहार में जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करती है। इस संदर्भ में यह भी स्मरणीय है कि इनकी कविता में भाषा का अर्थ भाषा ही नहीं, एक सार्थक समझ भी साथ-साथ विकसित हुई है जो आदमी को आदमी से जोड़ती और वैचारिक जड़ता को समूल नष्ट करती है।

मत्स्येन्द्र जीवन से जुड़े संदर्भों के बीच प्रकृति का अनन्त स्वरूप सुरक्षित बनाये हुए हैं। प्रकृति के मानवतावादी चित्रों में जन-जीवन की चेतना अभिव्यक्ति के उत्कर्ष को पार कर गयी प्रतीत होती है। जब कभी समस्याएँ मानव-मन को घेर लेती हैं और घिरा हुआ आदमी कोई निराकरण सामने नहीं पाकर वापिस लौटता है, प्रकृति के आँचल में तब नीरस हो गया जीवन भी सराबोर हो जाता है। आकुल मन इस प्रकार खिल उठता है जैसे वसंत में पेड़ की डालियों पर नयी-नयी कोंपले।

किसी समय में

कविताएँ

किसी समय में

मत्स्येन्द्र शुक्ल

15-ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद

बाबा स्वर्गीय रमापति शुक्ल, राम पदार्थ शुक्ल
तथा रामरतन शुक्ल की स्मृति में

अनुक्रम

नदी से आगे एक और नदी

वह समय जो वसंत और पतझड़
बदलते मौसम के उत्सवों को कंधे से टिकाये
कई दिन पूर्व आँखों के लगभग सामने से
मद्धिम आहट बुदबुदे स्वर थोड़ा आक्रोश छोड़
खलिहान में छिपी चिड़ियों को हड़ाता
हाथ झाड़ विह्वल फकीर-सा चुपचाप निकल गया
सम्भव है लौट कर आ जाय संवत्सर बाद
भाग्य-लिपि के अनेक रिश्ते जुड़े हैं वक्त के साथ

समय अपने संग तमाम वस्तुएँ दृश्य
सयानी स्मृतियाँ
बच्चों के निमित्त चमत्कार
आंदोलनों परम्पराओं के आधार-चित्र
उत्सुक यात्री-सा लेकर आता है निःसंकोच
गाँव-नगर खेत खलिहान
ठाँव-कुठाँव
जिसके हिस्से में जो बनता बाँट कर देखता-
दिशाओं में टँके आदिम बोध के बिम्ब

यही हैं वे अ-मृत आत्माएँ
जो कल्पना-वीथियों में बुनती रहतीं निरंतर
दिव्य आकार रत्न-ज्योति प्रखर तेज
हवा सदैव बुहारने को तत्पर पृथ्वी का नग्न वक्ष
जो नहीं उसके सम्मुख कल के लिए प्रश्न-चिन्ह

ईश्वर का सम्बोध जब नहीं था तब
आकाश में बनते-मिटते
बादलों के चित्र-ही पर्याप्त थे कुछ सोचने
नदी से आगे एक और नदी से बचने के लिए
फूल-पत्तियों झील ताल हिंस्र पशुओं के द्वन्द्व
अज्ञात शक्तियों से टकरा कर खुद पर चकित होना–
धार में नाव की पतवार गुफा में तिनके-सा
कहीं दिखा होगा तब वह
जो है ईश्वर

क्षितिज के रेशमी डोरे उठा आयेगा समय
समय के साथ उभरेंगे कुछ नये संदर्भ
खुलेंगे भविष्य के गर्भ में छिपे अनगिनत अर्थ
नीरव चाँदनी रात में टूटकर झरते जैसे स्वप्नों के छंद

अतीत ने केवल यही दिया

पुराने बोध-सम्बोध चिंतन के आदर्श
काई-तल में विलुप्त यदि सत्वहीन लुगदे बन चुके हैं
इच्छित नहीं दिखता कुछ भी--
प्रकाशहीन परिपथ
अतीत की जड़वत परम्पराओं में
त्याग दो अनगढ़ रूपाकार बीमार यश-गाथाएँ
समय समाज व्यक्ति और सृष्टि के पक्ष में
अनुकूलता का सृजन करो
जो कालिमा उसके विरुद्ध अभियान पर चलो
रास्ते हम बनाते निर्भर नहीं पूर्व पर

अतीत ने केवल यही दिया चुटकी भर राख का प्रसाद
समझ सकें गति-नियति का विनियोजित अर्थ
जो ब्रह्मांड वही संवेदनशून्य
बधिर मौन
प्रार्थना के स्वर मिले जो खण्डित विद्रूप
वर्तमान की नाभि में स्थित उन्हें स्वर दे रहे हम--
साक्षी हैं पर्वत समुद्र आकाश

अरण्य बूढ़े वृक्ष
खाँसती नदियाँ धुंध भरी घाटियों में पड़ी हैं अचेत
विकलांग औरत के अन्तिम मटमैले स्वप्न
काँटों में फँसे पतिंगे सूर्य की अनुपस्थिति में टूट रहे
ऐश्वर्य का कोई मतलब नहीं
जब ब्रह्मांड के त्रिकोण पर सुलग रही हो बीती रात की आग

रात्रि में तारे अदृश्य हुए जो शान्त
भोर में निर्मल उजास लिए दिखा चंदन पुता आकाश
धरती के अंकुरों ने निहारा परिवर्तन का व्यास
स्मृति में कल्पान्तरों के प्रतीक
प्रेरक आदि चेतन-शक्ति
ढो रहे प्राणी उत्सहीन उद्‌गार
निर्माण के प्रतिदर्श निर्मित कर रहा वह
जो अदृश्य अज्ञात अबोध

कितने दिन तक ढोयें बीते कल का विषाद
आगामी कल भी आ रहा बाज-पंख पर सवार
काँख में धरे असह्य दुख-भार
नोच कर रख देगा जो जीवन में शेष अभी रत्ती भर तेज
चलें क्या उन्हीं शिलाओं की ओर जहाँ अन्तिम टंकार !

वह एक यात्री था

ऊँचे टीलों तक मोहवश आना और आदिम
चक्राकार प्रस्तर-खण्ड का स्पर्श कर
मनौतियाँ बाँटते किसी अन्य दिवस के नाम लौट जाना
सघन पीपल-वृक्षों के बीच जहाँ से दिखता
अग्नि-मुख व्योम
थाप के लय में बजते सजीले कटे-फटे बादल
सूरज टहल रहा दुब्बरपन साधे
धूप-छाँव के आयत में

सूर्य-परिधि में उग आये हैं चिकने धब्बे
सांध्य-धुंध में अड़ियल-सा दिखता स्पष्ट
माघ का अतिरिक्त दर्प
यही दस-पाँच दिन और सुयश के
फिर तो सूर्य समेट देगा सम्पूर्ण दूरियाँ-
औघड़ कंथे से नहीं
बिखरे केश से छितराता है चिनगियाँ
नेत्रों में दहकता अंगार

फाल्गुन के साथ टूट गया शीत का हौसला
अलिप्त छिटकती रहीं किरनें सूर्य-वक्ष पर
टीलों के समीप छॅछड़ती हैं अनचाही लताएँ
पीत-पुष्पों के उजास में खिलता मौसम
डगर चौबंद-
दिख रहे गुच्छलसित तीसी जलेबिन के बैगनी फूंल

फाल्गुनी हवा के मंद प्रवाह में
भूखी गिलहरियाँ फाँद रहीं डाल के शीर्ष तक
जहाँ चमकते बेर के कत्थई कचौंध फल
किट-किट तानपूरा साध खेलती हैं तृप्त गिलहरियाँ

कृषक-भेष में वह एक अलौकिक यात्री था
जिसने भोर में पूछा नदी की तरंग
सूर्य की सजीली किरनों
गेहूँ की सुनहली बालों
सुगंधित बौर से
कल जब अँधेरे में विलीन हो रहा था सूर्य
कहाँ थे वे जो पुनीत भोर में गा रहे मंगल-पद

जन-विप्लव का इतिहास

बीहड़ों में बसे गाँवों नाराज झोंपड़ों से दूर
तथाकथित बुद्धिजीवी राजनेता सिद्धजन
तलाश रहे अगले समय के लिए सम्भावनाएँ।
अघोरी साधना में जरूरी नहीं
एकान्त में नन्हें दीपों का रात भर सुलगना

कठिन है प्रत्येक नया दिन
अतीत की सहमति पर वर्तमान ने कहा–
जमीन और वस्तुओं का बँटवारा आसान नहीं
चुक जाती स्याही हस्ताक्षर का समय आने पर

मिर्च की चटनी अरहर की रोटी अधजली
युगों तक खाया उपेक्षित समुदाय ने
चोर दरवाजे की शान्ति को विधिवत समझ रहा समाज
सिटकिनी बंद होने पर नंगा नाच करेगा बुद्धिमान–
घूम फिर यही करकट को बेच रहा सोने के भाव

छद्म वेश भाव और शब्दों से डरने लगे हैं वे
जो भीड़-बीच सुना रहे प्रगति के संदेश
संसद के दरवाजे पर भूखों का रेला
बेचैन नेत्रों से रिसता जल देख
रिश्वतखोर पीटता है इमारत का पिछला दरवाजा
कि आग का लहकना धुएँ का बवंडर बन हवा में तैरना
अब कोई रोक नहीं सकता भू-खण्ड में

मान्यताएँ रूढ़ियाँ घुड़कियाँ बंदूक की आवाजें
तर्क भी रोक नहीं पायेंगे उन्हें
जाल काट उड़ जायेंगे मुक्त पंछी की तरह
अखाड़े के नगाड़े चुप दिखेंगे जंग के दौर में

सामाजिक न्याय के उद्घोष से ऊबे लोग
हो रहे परेशान आश्वासनों की मार से
समय को घटनाओं में झाँकना सम्भव अखबार के लिए
जो इसी के बल ले रहा साँस मुलुक में
हुक्के पर धधकती चिलम का गुड़हर स्वाद

इतिहास-नद में अदृश्य अस्थि-पंजर की तरह
नहीं रह सकते चिरकाल तक निष्क्रिय ये गाँव
परिवर्तन का यथार्थ कहाँ है मौन चेहरों के पास
षडयंत्र में सिमटेंगी अभी कुछ और रातें
दीमक चाट रहे खिड़कियाँ किवाड़ रोशनदान
गर्वीले पहाड़ सीना थाम झुकेंगे एक दिवस
जन-विप्लव का इतिहास रचा जाता है वर्षों में

वह एक टाँग का आदमी

वे समारोह में महज इसलिए आमंत्रित थे
कि देखें जमीन पर भूरी चीटियाँ वृत्त बना
किस शैली में सूंघती हैं
धूल की निर्गन्ध देह
कैसे सूक्ष्म छिद्रों से तापमान का अनुमान ले
क्षण में बदल देती हैं डेरे का स्थान
कैसे खरी दुपहरी में
नेत्रों के समीप थिरकती है धूल
गाँठ भर धूस में हाँफता उपरहार
पैर की बेवाई में पाव भर बबूल के पत्ते छोप
कैसे सूर्य के तप्त आलोक में भाग्य पर बिहँसता
पीतवर्ण बंजर

प्रकृति के विरूद्ध गाँव नहीं उठाता बवेला
तूफान देख कन्नी काट छिप लेता है मड़ार में
गाथाएँ सुन
सारी विपत्ति चढ़ा देता महामाई की धार में

आयोजक नहीं कहेंगे, हवा में उड़ रहीं तितलियाँ
याकि संसद में प्रकृति की अगम सत्ता पर
पेश किये जायँ सवाल पुरजोर
या लूनी बकुलाही के किनारे खड़े किये जायँ तट बंध
गुप्त संकेतों पर नहीं चाहते वे जूझना
ग्राम-जन देखना चाहते आँखों में गर्माहट का रंग

हाँ यह जरूर पूछेंगे–
कल जो औरत बीमार बच्चे को गोद से चिपकाये
जा रही थी अस्पताल की धमनियाँ परखने
गुलरहा के समीप लुट गयी दिन दहाड़े
गुहार में शामिल जो छिप गये बंदूक की आवाज सुन
क्या हुआ उस औरत का ?

यह भी कहेंगे
कि वह एक टॉग का आदमी जो पेट बजाता
तिराहे के पार मौत को खुलेआम दे रहा निमंत्रण
किसी क्षण छू सकता बिजली के तार
आकस्मिक मृत्यु से कैसे बचा जाय देश में–
क्या भूख मिटाने का कोई उपाय है आप के पास

काली आँधी के वेग में

मछलियों को मछलियों के झमेरे में खेलने दो
नृत्य के रौ में तैरने गुनगुनाने दो उन्हें
मुक्त करो श्वेत वर्ण स्नेहिल मछलियाँ।
जलपरियों की प्रार्थना पर
लहरें कब से ढो रहीं आस्थापूर्ण ध्वनियाँ
शब्द कहीं गहरे उतर उछल रहे
पवित्र मणि की तरह
तनाव की असाधारण अवस्था में नहीं पढ़ा जाता
टुकड़ों में विभक्त आत्मा का संदेश

जाल में समेट किधर ले जा रहे जल-वैभव
प्रजापति वरूण का आनन्द, मेघ-स्वप्न
छोड़ो इन्हें सहज मन निर्मल सरोवर
नदी की धार में
धूम्र जाल-सा दिख रहा वेदना का अदृश्य प्रपात

अनन्तिम घाट पर चमक रहा रत्नों का भण्डार
कनक-हार पहन नाच रहीं ईंगुरी परियाँ

देख रहीं वृत्ताकार आकाश की लोहित करधनी
स्थिर जल के कठोर कोलाहल में
अकस्मात् लुट गयीं सगुणोपासक मीन-पुत्रियाँ

काली आँधी के वेग में मथ रहा हृदय सरोवर
बच्चों संग दौड़ धूप काई चाट संतोष कर रहीं मछलियाँ
क्या पता पानी में फैल रहा नियंत्रित जाल—
जल से प्रलय
प्रलय से मृत्यु। मृत्यु से पुनर्जन्म की गाथा
मीन-पुत्रियाँ समझ रहीं
अग्नि जल और वायु का संतुलनवाद

तप्त रेती में रवि-रश्मि का प्रखर तेज
फट रही मुलायम देह चर्म-विन्यास
जल कन्याएँ कहाँ बर्दाश्त कर पातीं ताप का संताप
मछेरे !
सौंप दो इन्हें अगम अनाम जल-राशि को
किसी दिन सागर तक स्वयं पहुँच लेंगी मछलियाँ
समय से निपटने के और भी उपाय हैं दुनिया में

चलते समय कई बार निहारा

कुछ कठिन घटनाओं को मुट्ठी में बाँध
वह घर से निकला था भविष्य की तलाश में
इतिहास रचना ख़ाक को महर्षि का प्रसाद बना
यश-वैभव लूटना लक्ष्य नहीं था मन में
वैसे भी पानी में डूबते आदमी की आवाज
पसलियों से टपकता दर्द
कुछ भी नहीं पहुँच पाता समाज की कचहरी तक
स्तम्भ-रचना में व्यस्त हैं कलाधर्मी

गाँधी मार्क्स माओ कुछ और कुलीन विचारक
उनके रचे बौद्धिक क्रान्ति
परिवर्तन के सिद्धान्त
धुले-मजे शब्दों से अवगत नहीं
वक्त का मारा यह गँवई नौजवान।
भूख रोटी वस्त्र झोंपड़े की सरुक्षा-
नितांत निजी यही कुछ शब्द शेष हैं कण्ठ में
श्रम भुनाने वह अकेला जा रहा महानगर की ओर

चलते समय कई बार निहारा ऊजड़ मकान
चैलियों पर छितरी माँ की फटी धोती
बीमार पिता की कातर ज्योतिहीन आँखें
वर्षा में ध्वस्त हो चुकी पिछवाड़े की दीवार
कोई ठीहा सही-सलामत नहीं वक्त के अनुसार
इकलौता बूढ़ा बैल तन्ना रहा नीम की छाया में

पड़ोसी झोंपड़े के समीप
निखरहल जमीन पर सोई बातूनी धोबिन
पार्श्व में उल्टा पड़ा वही पुराना मटमैला घड़ा
पेंदे को चाटती सरक रहीं प्यासी छिपकलियाँ
नाराज किस्म के चींटे तंदुरुस्त मच्छर
खंगड़ जीवन गुजारना भी सुखद है उस औरत के लिए

धोबिन की जुपुल माँ
घड़े के जल से नहाती मुँह धोती
पकाती एक वक्त खाना धुएँ के झकझोर में
रंच भर बिल्ली थोड़ा-सा कूकुर
शेष में चल जाता दो पेटों का काम
हाथ मजबूत पैर ठीक-ठाक दृष्टि बहुत साफ है
पट्टीदारों की हैकड़ी से घबराती नहीं बुढ़िया
गाँव में अनेक तरीकों से जी रहा इंसान

औरत

औरत का होना एक परिवार के होने का संकेत है
जिस घर में औरत अनुपस्थित, वहाँ
प्रेतिल छाया घूरती टहलती है छत से आँगन तक
स्थिर स्वादहीन हवा के बीरानेपन में
खिड़की और दीवारों की जड़ता से टकराता
लहू-लुहान दिखता मातिल लकड़बग्घा–
विचित्र आवाज भुहराता वह रक्त-पिपासु छिछना प्राणी

जंगल– किनारे अँधेरे से जूझता बूढ़ा फकीर
साफे का सत हाथों में लपेट कहता प्रवाह में
यही है वह शैतान जो दिन-रात हवा को घायल कर
खा गया मकान का भविष्य
रात जो बजते रहे ढोल तबले मंजीर
सब चिहरा कर लुढ़क गये काल के प्राचीर पर

वह औरत जो गाँव के बगल से डगर थाम जा रही
काँख में लुगरी छोटी-सी पोटली दबाये
जीवन की असफलता नेत्रों में छिपाये

पूछने पर कंठ से फिसलते हैं दो चार शब्द–
माई के घर नदी पार

वनस्पतियों करौदों फॅसरी की झाड़ियों
धारदार मेड़ों से टकराती खो जाती है आवाज
दर्द की बाँसुरी का मंद स्वर–पतन

पृथ्वी पर जब कहीं नहीं मिलता रत्ती भर सहारा
दीपक की लौ ज्यों सिहरती पथ को आलोकित करती
अटल भिक्षा–वृत्ति को नकारती
औरत पहुँच लेती है माई के घर
माँ सहज प्यार से खत्म कर देती वेदना बोझिल

आर्द्रा के रिक्त घने बादल
जब तड़कते प्यासी रेतीली जमीन पर
स्थिर खड़ी रहती नाव कहीं दूर नदी की धार में
तूफान से पीड़ित पुष्ट वृक्ष उसी क्षण
पत्तियों के सॉचे में छिपा लेते हैं विप्लव–दृश्य
औरत कोरे कागज पर बना देती दो चार अबूझ चित्र

सागर की दुनिया में

लहरीले घन-गुच्छों की छाया में सौम्य सागर
बुन रहा जाने कब से भविष्य के निमित्त
आधार-स्वप्न
लहरों के आक्रोश से मर्माहत
टूट जाता अरर डाल की भाँति टुकड़ों में

अटलांटिक से प्रशान्त तक सम्पदा कितनी, पता नहीं
याचक लौट रहे बेचैन लहरों के द्वार से
जलयान डगर बना निकल रहे यात्रा पर
रात्रि की मद्धिम रोशनी में दूरी का बोध नहीं, आभास
खग नहीं जो तोड़ें आकाश का अप्रत्यासित मौन

जल को निहारते उदास खड़े हैं थके-हारे यात्री
हताश लौटेंगे अरण्य की ओर
उड़ते पंछी ककहरा पढ़ बतायेंगे–
कहाँ है सरोवर मीठे नीर से भरा।
प्यासे आदमी का संवाद खारे जल से नहीं होता

सागर की दुनिया में सूर्य-गति का पता नहीं
पस्त अहेरी-सा कहीं टहल रहा होगा हरित वन में
निशा-वेला में नक्षत्र-गणना की मुद्रा साधे
चाँद दिखता नीली रेखाओं को तोड़ता कुछ बढ़ता
श्वेत गायें पहुँच गयी हैं आकाश के नैमिष तक
ब्रह्मांड के दर्पण में चमक रहा तिल-सा समुद्र

यह सागर जो दुर्लंध्य अगाध
पता नहीं कितना संशय ले जीता है नील व्योम
जो उड़ा पाँखें पसार तिरता ही रहा शीर्ष तक
पृथ्वी के उत्सव में केवल चिड़ियों का कलरव

समुद्री लघुद्वीपों पर आसीन गिलहरियाँ जल-कुक्कुट
सुबह की प्रतीक्षा में निहार रहे
दूरागत पोत की रोशनी
दिन-रात थपकियाँ देती निष्कलुष लहरें
सहला रहीं कठोर रोयेंदार पत्थर मुर्छली घासें

अमरूद की झुकी टहनी

मौत से कितना घबराया है आदमी जंगल-जीव
अदृश्य आखेट से क्षुब्ध कलिंगी चिड़िया मासूम–
जो इच्छित नहीं दिखता केवल वायु-गति का भ्रम
अभी दृष्टिहीन एक वृद्ध यात्री का होश गुम रहा
सुना जब नदी जल कर राख हो चुकी कल की रात में
मृत्यु के पर्याय से नहीं परिचित हम

विलुप्त नहीं हुए शब्द समय के प्रकल्प में
आत्म रस की अभिव्यक्ति खालिस व्यंजना नहीं
यथार्थ का अप्रतिम संकल्प भी
सम्पूर्ण प्रतिबद्धता में जो सुरक्षित कहीं–
यद्यपि आत्मा के द्वीप घिरे हैं प्रबल तूफान में

मृत्यु-दृश्य से नहीं डिगती कवि की आस्था
लपटें उठती-बुझतीं संताप के झोंक में
वीभत्स मांसलता में अधजली लकड़ियों पर
अट्टहास करें जितना चाहें मरघट के प्रेत
अवांतर सूक्ष्म शक्तियाँ निरंतर रच रहीं

क्रूरता के विरूद्ध करुणा के स्थापित बिम्ब
भड़भूजे की झोंक में तमाम तितलियाँ
राख का मलिन स्वप्न बन नष्ट हुई
फिर-मी छोड़ गयीं
नृत्य-कला के लक्षण धरा के दिव्यांचल में

मस्त हवाएँ अक्सर बटोहियों से पूछतीं
कहाँ गयीं सप्तवर्णी तितलियाँ
समय जब खिलाफ नाहक दोष देते कौवों को

अबोध शिशु ने नींद में आरम्भ किया खोजना
अमरूद की झुकी टहनी केले के गुम्फित फूल
श्वेत कनेर करौंदे के फल कॅंकड़ी की कली
रबर के कजरारे पत्तों में-
गुलमेंहदी के फूल में भी नहीं दिखीं तितलियाँ
घबराया-सा खुजलाता रहा अँधेरे की देह

उसे मृत्यु और अनुपस्थिति के फ़र्क का पता न था
सोचा-वक्त आने पर पुनः लौट सकती हैं तितलियाँ
काल-गति से अपरिचित स्वप्न में हँस रहा शिशु
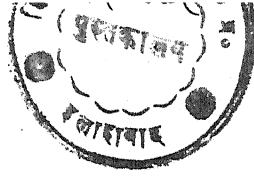
मटमैले गाँव

दिन भर तपता-सी तपी
तारकोल के रब्दे में नहाई सड़कें
सांझ भये अँगड़ाई ले खुले मुख झाँक रहीं
आकाश में कान्तिहीन बुझते सूर्य का आकार
अतृप्त किरणों ने झौंस दिया पुष्प हरीतिमा
धूर-माटी से भर चली देह

कितना दम्भ चमकते ललाट पर
जब सूरज उठा था पूर्व की अपूर्व घाटी में
पुष्प-अर्पण के क्षण हर मुख निकल रहे थे
प्रार्थना विनय और मंत्र के शब्द
संध्यान्त के समय मिट गया तन-ताप का झमेला

अँधेरे का प्रवाह तोड़
श्वेत चाँदनी-धार में सिरे तक भीगेंगी सड़कें
खलासी लेन के दमदार मजदूर सिर उठाये
इसी तरफ से जायेंगे अति अनिवार्य ड्यूटी पर

विशिष्ट कुत्ते अब नहीं दिखते सड़क पर
सुस्ताते होंगे कहीं मुहालों की सकरी गलियों में
बलिष्ट साँड़ चौराहे की शान्ति नष्ट कर
जुटे हैं वीभत्स समर में
साँकल से बँधा हाथी सूड़ से उड़ा रहा मैदही धूल
पानी के चक्कर में खौखिया रहे बूढ़े लंगूर

कलरवमुक्त गठीले वृक्षों की अस्वीकृति
ग्रीष्म के अखरते प्रभावों, कुफल को
अधिकतम अनुभव कर रही प्यासी पृथ्वी
हर पग चकेरी-सी जमी झोंझिल समस्या को
मौसम के प्रतिकूल सुलझा पाना आसान नहीं
सिर धुनता उदधि-क्षेत्र की ओर जा रहा महाकाल

ठुनकते पीपे आ रहे
गाड़ियों बैलगाड़ियों पर लदे
सुबह धुएँ संग दूर तक पसरेगा डामर
सिल उठेंगे फुटपाथ के खुले चेहरे।
सड़क और देश के बीच का लम्बा फासला
तब और सही भाषा में बतायेंगे मटमैले गाँव
जो दूर बीहड़ों के पार बसे हैं नदी-नालों के बीच में

संशय से घिरे गाँव

सप्ताहांत के साथ समाप्त हो चुका है युद्ध
बुझ चुके हैं खून के चमकीले छींटे
टकराहट के साथ खन-खन नहीं टूटतीं तलवारें
पीली आँधी मायावी ध्वनि आतंक और चीत्कार से
भरा है वायु-मण्डल
सर्प-दंश की मनोदशा में खामोश हैं मुठ्ठी भर लोग
डबडबाई आँखों ताक रहे धरती से आसमान तक
नष्ट भ्रूण सूंघ चल रहा अंधकार कुहनी के बल
हवा को भांजता उंचास की शैली में
छिपे चेहरे और ही भयानाक होंगे अगली रात तक

भविष्यवाची जो चिड़ियाँ तोप के रेंज से काफी दूर थीं
बाँस की झालरदार टहनियों पर बैठी
पंख फुला चुपचाप जुड़ा रहीं
मिटा रहीं तन-ताप
नदी में भोरहरे जल भरने नहीं पहुँचीं ग्वालिनें
जवान पुष्ट औरतें
सिर पर हाथ धरे अनिष्ट की बातें सोच रहे

अवसाद और संशय से घिरे गाँव के लोग
युद्ध खत्म होने पर भी पंकिल हो रहीं नदियाँ
मलिन धब्बे की तरह दिख रहे ताल पोखर नाले
लतरहीन जंगल में नहीं हैं नीली गायें
आधी रात की शंकालु वेला में रोती हैं विधवाएँ

साहसी बंजारे रात में टटोल रहे लाश–
पत्रहीन पेड़ पर बैठी चिड़ियाँ देख रहीं उस सिपाही को
जो चिलम सुलगा टहल रहा कुएँ के चारों तरफ

उत्तेजित सिपाही अब नहीं दिखते कहीं
दिखते केवल प्रमुदित गिद्ध उत्सुक कौवे सियारों के झुंड
दिवंगत वीरों की पुतलियों में तैर रहे रक्त–कण
कहीं छिपे दो अश्रु–विन्दु जो उठे स्मृतियों के पड़ाव पर
कौन सम्हाले शव–वेदना स्वजन बहुत दूर हैं

मृतक महावत की देह सूँघ
उदास हाथी सूखी लकड़ियाँ चबाते जा रहे कहीं और
पीलखाने के द्वार तक नहीं पहुँचें गे वे
अब इनका कोई मालिक नहीं दुनिया में
युद्ध ने नष्ट किया जन–वैभव समाज की शान्ति
जाने कब कुहके गी कोयल पेड़ के बसेरे में

इतिहास जो लिखा गया

समय को आकाश-छाया में सुस्ताते
'ब्लैक होल' के अँधेरे में रास्ता तलाश खुसकते किसने देखा
किसने समझा दिन-रात की अवधारणा का आधार
केवल इतना कि समय गतिशील है सचेत
ठहरता जहाँ वहीं अकंधार वृष्टि जल-प्लावन
हाक पक्षी के पतरौंछ डैने पर सुलगते कण
जितना अशुभ जो मृत्युमय
वह सब समय का संघातिक परिणाम है केवल

व्यतीत हुआ एक दिन देह कुछ पुरानी हुई
इतिहास जो गोपनीय लिखा गया तहखानों में
बताया जो कुशल समाजशास्त्री खगोलविदों ने
कुछ भी नहीं यथार्थ
टूट रहे कण ज्वालामुख का आभास

भौतिकताएँ असम्भव के शीर्ष तक उपजा रहीं
कुंठा के पक्ष में विद्रूप समस्याएँ
पतन की पताकाएँ फहर रहीं गगन में

अकाल उपद्रव में जो बहिर्गमन किये गाँव से
होंठ जिनके सूखे हाथ खाली
गदोरियों में चमक गुलाबी
असहाय पतंग की तरह खो गये शहर के बीचोबीच
झील में चीखती मछलियाँ, कौन सुनता है तट पर
शोषण के खिलाफ उठे जो भटक गये राह में
पत्थरों की रखवाली में ठाट से चमक रहा सूर्य

आत्मरक्षा में सजग होना अनिवार्य हुआ सब के लिए–
कितनी मातिल आवाज उस बंजारिन की
जो झूल रही पेड़ की झुकी डाल पर
तभी–तो उड़ रहे गेदुर दिन के प्रकाश में व्याकुल

मछुआरों की भीड़ में शामिल जो बूझ रहे
समुद्री सर्पों रंगीन कुछ काली मछलियों के दाम
अकारण नावें तैरा जाने किस ओर निकल गये
नहीं लौटे सूर्यास्त के बाद भी
अँधेरे में डगर निहारती बैठी हैं अपरिचित औरतें

चौराहे के बिल्कुल बगल

जेठ-आषाढ़ की उमस भरी तकलीफदेह दुपहरी में
पसीने से तर हवा जब अत्यधिक खामोश होती
नरखोह के हल्के तिनके सिमटते हैं
मखार के पत्तों पर
भूरी चट्टान का फट जाता मत्था
ऊँचे दरवाजों खिड़कियों के समीप बिछे दिखते
मृतक कीटों के सूक्ष्म आकार
दूर जड़हनी खेतों की लतर से झाँकती हैं
केचुओं की समृद्ध पीढ़ियाँ
सिरकंडे के फूल जमीन पर बिछाते चादर महीन

अंकुशहीन पीली दुपहरी में एक आदमी
कंधे पर बसूला रुखान मुलायम बाध लिए
त्रिभुज में लम्ब-सा मैल भरी हथेलियाँ उठा
दे रहा कृपण आवाज–

खाट बुना लो
चलनी का चेहरा हवा में झाँक लो

हवा में सीझ रहीं आक्रोश घृणा आवेश की ध्वनियाँ
धँस रही पुष्ट नींव मिट रहीं पुरानी स्मृतियाँ संवेग
गर्वीली दुनिया की महत्वाकांक्षा को पूंछ में लथेरे
मेथी के खेत में मड़िया रही भैंस
सावन को मालूम नहीं किस रफ्तार में उड़ रही धूल
दिशाएँ बजतीं बेताल सितार के जीर्ण तार की तरह

काल–संकेत से व्यथित
बूढ़े कबाड़ी से पूछ रहा हताश आदमी
दे सकते हो मुझे कामचलाऊ एक कुल्हाड़ी
फिलहाल मेरे पास कुछ नहीं न बंदूक न बम गोली भी नहीं
देखो–देखो उस तरफ–
नंगा आदमी कंधे पर लाश उठाये कैसे भाग रहा निःसंकोच
यही है शायद शताब्दी का अन्तिम विश्वसनीय दृश्य

सकते में उछल पड़े लोग जो दरवाजे पर खड़े थे–
खटोले के बगल रँभाती गाय को दूर तक खदेड़
बैठ गया शातिर आदमी तेज साँस फेंक कर
वही जिसने चाकू से छील दिया मुर्गे की पुष्ट देह
अपराध की परिभाषा बदल मर्द खाँस रहे पलँग पर
देश खौलते कड़ाह में तड़पता एक पतंगा है केवल
जिसके होने न होने पर
शुद्ध वचन, शोक और श्राद्ध की जरूरत नहीं समाज में

भटक गये राह में

जाने किस तरफ से आ रहीं खामोश हवाएँ
पुष्प-तन तरुण वृक्षों के बदल रहे रूप-रंग
पुश्तैनी खण्डहरों में झूलते तोते मुआई मार
दुपक गये मुड़ेरों पर
हरे पौदों के चेहरे पर जम रहीं माटी की महीन सतरें
श्यामल नेत्रों में गर्म जल भरे बुलबुल के जोड़े
पनाह ले रहे पलाश के आवरण में
गर्म हवा की मार से टूट रहे तरु-पंख

थोड़े दिन पहले हवा में बिखरे जो शब्द
निर्णायक दौर से गुजरते लौट आये हैं शिविर में
खुले मन जनता उन्हें दे रही दुलार

मुश्किल यह कह पाना सुरक्षित है संसद की मर्यादा
लोग न फेकें शब्दों को बना कर महास्त्र
उद्‌दण्ड बहस के क्रम में
नष्ट हो रहा नये व्याकरण का तर्कशास्त्र
आय-व्यय में जो वही घाल-मेल व्यवस्था में

माँच की बारीक डोरियाँ भी कर सकता हूँ दुरुस्त
धूप नहाता एक आदमी और है जो सवाच रहा सामान
गिन रहा झोले में रखे फुटकल पैसे
वस्तु और आमद में मेल नहीं
खुजलाता खुर-खुर सिर के मटमैले गझिन बाल

लँगड़ा-सा एक तीसरा आदमी भी है
जो चौराहे के बिल्कुल बगल पेड़ की छाया में
बेच रहा शुद्ध जल
केवल जल
कंठ सींच सब की साँस संतुलित करता विधिवत
बेहद खुश वह अतिसाधारण व्यक्ति

ऐसे मौसम में तिजोरियों पर हाथ रख
महाजन गिन रहे नोट के पुलिन्दे
सोने की गिन्नी चाँदी के टुकड़े हीरे-जवाहरात
गरीब हैं कि समय से ले रहे लोहा
काल के विरूद्ध छिड़ा जंग आसान नहीं होता

माटी का दाम

लहू-लुहान शताब्दी के आखिरी दौर में
जब कूप सरोवर और अतलांतिक का खारा जल
अंदाज से अधिक खौल कर चुप हो चुका है
नक्षत्र सौर-मंडल से पृथक गुफाओं में ले रहे शरण
ऋतुओं में अप्रत्याशित हो रहा परिवर्तन
रासायनिक प्रयोग से काँप रही वसुंधरा :
निरर्थक पुकार रहे तुम बिगड़े माहौल में-

कहाँ है !
कहाँ है चन्द्रगुप्त !!
कुछ-भी पता नही विकल देशान्तरों में
गुमनाम कहीं चुपचाप सोया है चन्द्रगुप्त
वही सुन सकता झुग्गी-झोपड़ों में कैद
हताश आदमी की दारुण व्यथा-कथा
शून्य काल में कौन प्रस्तुत करे उसे-
चाणक्य-सा कोई आचार्य नहीं जो देश को
शक्ति और उत्कर्ष का संकेत दे कुछ मौन मंत्र
दिशाहीन लोग अपने ही घर में झोंक रहे आग

सीमाएँ असुरक्षित शिखर तक
अरावली-श्रेणियों पर तड़क रहे गीदड़
चरागाहों से लौटे पशु टहल रहे नदी के मोड़ पर
वनमाली सूफियाना अंदाज से निहार रहे
पृथ्वी पर किस हद तक उभर रहे खूनी फफोले

कौन संसूचित करे एकात्मवाद का महामंत्र
अरण्य-रोदन शताब्दी की भाषा नहीं फिलहाल
कुक्कुट आवेश का कुफल लेकर लौटेंगे निराश शब्द
इतिहास के गवाक्ष से कब-तक पुकारोगे भूखे-प्यासे
वक्त के हिसाब से काफी दूर निकल चुका है चन्द्रगुप्त

तलहटी में नाचती बेसुध आँधी में जो लुप्त हुआ
लौट कर फिर वह नहीं आता बन्धु
सागर पर्वत बीरान जंगल किसी एकान्त में
छितर कर मिट जातीं स्मृतियाँ अर्जित
अनन्त काल तक सुरक्षित नहीं रहता देह का नश्वर इतिहास
समय तौल कर रख लेता गाँठ में माटी का दाम

बंधे की कचहरी में

व्याकुल नहीं हूँ अग्नि–शिखरों पर हो रही क्रान्ति से
झरते स्फुलिंग बुझ रहे अँधेरे में, हल्का उजास
शिलाओं नुकीले पत्तों पर फिर–भी जमी है बर्फ–
पौरुषहीन क्रान्ति का असफल प्रयास

कहाँ तक झुलसेगी पगलाई चिरकती आग–
ठूँठे की आड़ में बंदरों का नृत्य
अघाये कौवे टाँग खुजला सो रहे घूरे के पत्तल पर
शरीफे की बाग में हुल्लड़ मचा खीझ रहे बच्चे
सुस्त नदी की बाँह पर तेंदुए लेटे हैं मस्ती में
झाड़ के बखेरे में थिरक रही बाचाल लोमड़ी
मकड़जाल में छटपटा रही हरफन तितलियाँ
वियोगिन चूल्हा दहका खड़ी है द्वार का पल्ला थाम
मरकट के हाथ टूट रही दूल्हन की मूल्यवान कड़ी
कई और दृश्य उभर आये हैं धूप और छाँह में

अखरोट की छाया में सीटी बजा
जंगल–देश की सयानी लड़कियाँ कुछ सुना रहीं

पलक भाँज ताक रहीं फूलों का मौसमी अलंकार
झील-किनारे घड़े पर थाप दे खिलखिलाती हैं
पुष्ट जवान औरतें
रास्ते की सुधि नहीं किधर से होकर जाना
विहंगिन हवा में साध रही गति बल
गुमटी पर बैठा तीतर सूरज से मिला रहा आँख

बंजर-पैमाइस के निमित्त कल जो आये गाँव में
टेंट गरम कर लौट गये उल्टे पाँव
कागज फर्जी जो नत्थी हुए फाइल में
वकीलों की बहस में भटक चली अदालत
एक और लाश क़ी कीमत अब अदा करेगा कौन

बंधे की कचहरी में बैठी अधेड़ औरतें
मरदों को थमा रहीं हुक्के की आखिरी चिलम
दो क्षण बाद हवा में धुएँ की लकीर खींच
वे सुनायेंगे दर्द भरे चैता के गीत
भिंडी की पत्तियाँ देर तक चमकेंगी हवा के मोह में
उत्तराधिकार में जो मिला उसी को झेल रहीं पीढ़ियाँ

कवि

संघर्ष के शिखर तक पहुँचता है कवि
धुंध और अँधेरे की समस्या से नहीं घबराता
कालजयी है कवि
दुर्दिन से घिरे दिशाहीन जन को
विचारों का समुचित सम्बल दे
सम्पूर्णता में तमाम तर्क निखारता है कवि
त्रिकाल-बोध संज्ञानेतर बिम्बों को सवाच कर रखता
सँवारता है अनुभूतियों के उभरते द्वन्द्व

बारिश के दिनों खिल रहे गुलमेंहदी के पुष्प
फुर्त चिड़िया हवा में उतर लौट गयी भ्रववश
बया के शिथिल बच्चे सहलाते हैं मक्के की बाल
टपक रहीं रस-बूँदे ज्वार के भुट्टे से
श्वेत पत्थरों के ढेर में बजता अदृश्य तानपूरा
अँजुरी भर शब्द समेट हकला रहा समय-
ध्वनिसाम्य कहाँ दृश्य जगत में
शब्दों से उभरे अर्थ सिमट रहे पंक्ति में निषिद्ध

सहजन की छीमी पर
नीलांगिन तोड़ रही श्वेत जाल
लक्ष्यहीन नदी की बाँक पर गुर्राता तृप्त सिंह
जंगल खोया है गहरी नींद में
धुएँ की मोटी चादर समेट रही शिखरों का आकार
पृथ्वी की हथेली पर खिलौने-सा झूम रहा पहाड़

सपाट मैदान को तीन तरफ से घेरती दुर्बल नदी
अकेलेपन में सुना रही शास्त्रीय ध्वनियाँ
बूढ़ी बिसातिन आँचल हिला मगन है घाट पर
भीलनी दौड़ रही भेड़ बकरियों के साथ
चौतरफा काली चादर बिछा मुस्किया रहा आकाश

मुरझाये पेड़ों कोहरे की टपकती बूँदों
हरे सर्पो के साथ खेलती पुष्ट मछलियों
उछलती रोटियों के लिए टूटते भिखारियों को
केवल देखता नहीं-
सार्थक शब्द-चित्रों में रेखांकित करता है कवि
तभी तो सत्ता के केन्द्र में बैठा हौलदिल
तलाश रहा कहाँ है कवि
जिसने उकस कर विधिवत भड़का दिया सोते अवाम को

अहिंसा के पक्ष में

नील सरोवर के समीप टीले पर बैठा
किसे निहार रहा यह आरत पंछी
लहरों की दिव्यता को लुटा स्वपन
मैंपन से पूर्ण मुक्ति को साध रहा संतवत्
भूरे शंख-सा चमकता मध्य में आकाश

महुए की सूखी पत्तियाँ चबा
छाया में पगुरा रही दुर्बल एक भैंस
तप रहे बराती जेठ की असह्य धूप में
खोह के कंठ पर पिहक रहा क्रोधित फेटार
लोलुप बगुले ताक रहे मछलियों की रेशमी देह
बेहद असंतुलित है मौसम का कर्मकांड

चतुर्दिक देखता ठिठकता कोई आ रहा
शीतल छाया की तलाश में—
पलाश-वन में गा रहा उषा के अभिनन्दित गीत

कल के पहले का कल जो बीत गया

कितना घमासान रहा पश्चिम के धूमिल कुहासे में
आत्माएँ धूम्र-शिशु की तरह लुप्त हुईं
धूर की रस्सी बुनता फिर-भी बैठा
कारिन्दा मुँहफट।
दरवाजे पर सिपाही नहीं बेतुक भौंक रहे बहेतू कुत्ते
अघोरी बस्तियों में हीरे बिक रहे मिट्‌टी के भाव

पंछी कैसे खोले भविष्य की गाँठ
वही समझ रहा जो दो क्षण पहले उठा बगूला
कलमुँही केदारिन ने गजब लेस दिया ठाटर
जो भड़की आग फिर बुझी नहीं इतिहास में

क्षितिज के माथे पर कुंकुम हल्का तेज
पार्श्व में लुढ़कता पत्थर का टुकड़ा आ रहा एक
मुख धो सरोवर कभी देगा उसे मूर्ति का आकार

थोड़े समय तक नहीं आयेंगे जन पार के गाँव से
केवल चुरिहार केवट जिन्हें जाना दो-चार कोस
अहिंसा के पक्ष में कुछ सुनाता रहेगा करुणामूर्ति पक्षी

बरछे की नोक पर

इस रास्ते से कल गुजरे होंगे निश्चय ही
सिपाही किस्म के क्रूर विध्वंसक
आतंक के समर्थन में अघोषित वाक्य दुहराते
पत्थर से पत्थर तोड़ चिनगियाँ बिखेरते–

गज भर धसकी पृथ्वी नष्ट शिखर
गाँव त्याग आदमी बन रहा चौराहे का जुलूस
विद्रूप चेहरे देख बरबराती हैं गुलकियाँ

पशु मेले से लौटे पूरब के व्यापारी
भेड़ बकरियाँ धकेल दिये हैं भीटुलों की ओर
सुबह हवा की मानिंद कहीं खिसक जायँगे अज्ञात
पराजय भूख बेचैनी कुण्ठाएँ अनेक दिल में छिपाये
काक दौड़ रहे जहाँ सूख रहा पशुओं का शरीर

सेना की गाड़ियाँ कहीं भचक रहीं भाँय-भाँय
ध्वनि-धार में थर्रा रहे गझिन पेड़ पंगु पशु
शिविरों से उठती गठीली आवाज लगातार

चर्म-साधना के भुतहिल मंत्र पढ़
भुजंग लोट रहे उथले जल में
चटोर नागिन रौंद रही अबोध शिशुओं का भविष्य
सुपेली में एकत्रित चीटियाँ तलाश रहीं सुरक्षित डगर
कल की बारिश में सीझ चुकी जो पूरी धरती

धुएँ के धागे में झुलसे होंगे नेवले गेदुर कुछ चूहे
सब कहाँ दौड़ पाते एक ढब एक तरफ
खास कर जब जूझ रही हों अनियंत्रित लपटें
ठंडा पानी पी सोचता बूढ़ा खैरगढ़ का सपेरा
बेमौत मारे गये नाग सघन वन में

घाटी के घूँघट पर थिरक रही बेखबर चाँदनी
क्या पता पड़ाव के घेरे में सुलग रहे तमाम गाँव
गिद्धों का उड़ना जरूरी नहीं प्रत्येक मौसम में

अतिथि-गृह का वही पुराना प्रहरी सीटी बजा
बरछे की नोक पर साध रहा पहाड़
व्यंग्य-मुद्रा में मुस्काते हैं हिरन के दौड़ते बच्चे

नटखट ये बादल

सकल सौन्दर्य नेत्रों में ज्योति का उत्कर्ष लिए
दो श्वेत पक्षी नीरव आकाश को बेधते
भोर के हलके में पंख सिकोर
बैठ गये चपल मति झोंझ के द्वार पर
हवा में झूलती रहीं बाँस की कैनियाँ
सुनाये दो–चार शब्द प्रणव
सामवेद में नहीं जो उन ध्वनियों का तात्पर्य

सूर्याभिमुख सिर हिला
भविष्यत काल की भाषा में बतियाते
धीरज धरे कुलकते रहे उदात्त परिधि में
बगीचे में सुस्ताती हवा ने समझाया व्याख्या सहित
सम्पदाएँ सभी नगण्य प्रेम के सम्मुख
हर हाथ नहीं गढ़ पाते शिला–खण्ड से मूर्तियाँ

समुद्र–वक्ष से उठे चले भटकते
रवि–ताप को साधते
आकाश में मौन को तोड़ते रहे घन

टिप-टिप गिरीं भटकी बूँदे हरित पत्र-मुख पर
चिड़ियाँ हँसी कि नटखट ये घुमरिल बादल
झुनझुना बजा दिन भर नचायेंगे जंगल पहाड़
बूँद भर जल पर आस टिका
नवांकुर ताड़ रहे गगन-छल
कण्ठ में जल टपका सुबह तक बिखर जायँगे बादल

समय जब ठीक-ठाक नहीं अकुलाया सागर
फूल सूंघ मतियाया रहा इक्वेडोर के छलछंद में
नष्ट हुईं प्रकृत टिप्पणियाँ
पावस के दिन रीते कठिन झंझट बीच
शैशव का ताम्र-कुंड गुम हुआ चरनी के जल में

सृष्टि में चल रहा जो निष्काम कर्मयोग
नक्षत्रों की देह से जो फैल रही सुगंध
दिशाओं में चँवर डुला खड़ी जो देव कन्याएँ
बच्चे जो साध रहे तीर छप्पर के उठान पर
सब का व्यवहार समझ रहे पक्षी युगल

दुनिया को जो देना सम्भव
साँसों के लय में वही-तो सुना रहे नभ के यात्री

आकाश से चली हर नदी

सोने की झालर नचा पृथ्वी पर उतर आई है धूप
पीली धूप में चमक रहीं हिरन की आँखें
ताल के खरिंजे में अँजुरी भर जल नहीं
नथुनी उतार बगुली सूंघ रही मिट्टी का वैभव

सिर घुमा हिरन ताक रहा नभ का विस्तार
बदरिहा घाम पत्तों पर बिछी चिकनी धूल
कहीं और होने के हिसाब में उचक रहा हिरन
ढाक के पत्तों ने डुला दिया हवा की मंद मुर्छल

एटॉमिक युग में मूल्यवान चीजें बटोर
अरबपति सहेज रहे आरक्षित तहखानों में
समुद्र झुँझला रहा विनाशक प्रयोग से
प्रशान्त की शान्ति भंग कर मदांध उड़ा रहे ध्वंसक विमान
नारंगी के खेतों में चल रहे आतंक-शिविर
हत्यारों से डरा आदमी लेटा है रेल की पटरी पर
संसद से भगा आदमी पूछ रहा चरवाहे से–
कुछ बता सकते हो इतिहास-दृष्टि धर्म निरपेक्षता के बारे में

कुएँ पर जमी भीड़ से घबराई पनिहारिन
निहार रही घड़े का छिद्र
कितना–ही करे जतन जल–पतन
केले के फूल सूंघ बया के बच्चे खेल रहे माटी में
प्यास रेतीली जमीन का संस्कार है

परिवर्तन के बहाने समय जब उठा देता
सुरमई परदे
पपीहे की उम्मीदें बढ़ जातीं अगले नक्षत्र तक
धर्म–पुरुष दीप जला दुहराते विनय और
प्रार्थना की पंक्तियाँ
आस्था से चमत्कृत हो उठता दृश्य–जगत

हिरन फिर आयेंगे ताल–किनारे नदियों के संगम पर
गुहार में शामिल होंगे तल के कंकड़ सूखे पत्थर
प्यासी औरतें जल भरने जायेंगी कोसों दूर
बच्चे रोयेंगे कैथा रोटी और चटनी के निमित्त
डाकिनी हवा ने सोख लिया जल बादल का
आकाश से चली हर नदी सूख जाती मरुभूमि में पहुँच कर

हथेली पर तौल रहे

कई वर्ष बीत चुके फिर भी अधिकांश लोग टेर रहे
मुक्ति के आश्चर्यजनक गीत
स्वतंत्र देश में गुलामी किस बात की
क्या देश के आजाद होने में अभी संदेह है !

आये दिन पूरे जोश में उठती है एक भीड़
गाँव बाजार शहर के मोहालों से
तेज आवाज कठोर शब्दों के साथ दनादन बढ़ती है भीड़
केन्द्रीय इमारत की खिड़कियों से झाँकते लोग
गढ़ते लुभावने बोधगम्य शब्द
वाक्यों में फिट होंगे जरूरत के वक्त

गाने का तर्ज लगभग वही पुराना–
(जो हमसे टकरायेगा
चूर-चूर हो माटी में मिल जायेगा)

वे कौन जो समूह से टकराने की ताकत
खुली हथेली पर तौल रहे

तिल की तरह
विकृतियों में घोलना चाहते चिंतन के सहज सूत्र
बाढ़ग्रस्त गाँवों में बाँट रहे मकुनी की रोटी
पूंजीवाद के टिकोरे नहीं मसलते जो फल रहे
हजारवें घर की अँधेरी कोठरी में
यह भी कि रातों रात खड़ी होतीं शानदार इमारतें

सधी भीड़ को कहाँ–तक अपमानित करेंगे मुट्ठी भर लोग
प्रशिक्षित तोते पंख फुला कई टुकड़ों में बाँट चुके बाग
गुलकियाँ सिर के नोच रहीं बाल
ताव के साथ कहते अखबार कोई नहीं तानाशाह
दिन में दस बार मुर्गियों के खिलाफ छपते समाचार
देश की नब्ज थाम बूढ़ा हकीम हकलाता पलंग पर

पैंट पर कुर्ता डाल बजरंगी टहल रहा अदालत के सामने
नौरंगी तीन तल्ले पर बजाता है बाँसुरी
सूखे मौसम में जग्गू के घर आ रहे तगादे
हिकारत की नजर देख रहा तहसील का चपरासी
बिन खाये साँझ तक हाथ मलती विवश महतारी
जमीन से शिखर तक छटपटा रहीं बेकसूर घटनाएँ

स्मृतियों से भरी रातें

कल नदी ने कहा :
थक चुकी अब चला नहीं जाता
हवा के विद्रोह से उड़ गयीं चिरपालित चिड़ियाँ
क्षीण लहरें प्रतिक्षण दे रहीं गति का आभास
तट पर नहीं आते लोटने अरण्य-जीव
वनस्पतियों के लमेर में बोलते हैं श्रृगाल

पर्वत ने सुनाया कभी सृष्टि का अनन्तिम अध्याय–
भोर में जो चुनरियाँ चढ़ीं फूल-मालाएँ परात भर
सब-तो पड़े किनारे द्रव्य धन स्वर्ण-कण
बौखल धार से क्या लेना केवल मातिल उच्छ्वास
सूखी रेत पर अतिरिक्त उत्साह लिए खेल रहे
दस-पाँच पक्षी स्थिर कगार तक
अपना नहीं रत्ती भर जग में–कहा मिट्टी ने स्वाद से

दुर्बल कितनी यह देह–
हिम-शिखर नहीं टुकड़े कठोर पत्थर के नन्हें
रोक रहे प्रतिमोड़ शिकंजे में कस बरबस

कि आगे तूफान चक्रवात से भरा विशाल एक देश है
पीपल-वन में कबूतरी अनुपस्थित केवल टूटे पंख
खरकट छिपकलियाँ स्थूल चूहे, कुछ उद्दण्ड कौवे
कर्कश ध्वनि में बोल रहे बनैले पशु
उबाऊ रातें कई दिन से कस रहीं वृक्षों का मौन
फूल पत्तियों का मुँह झौंस गर्म हवा खिसक जाती है दूर

व्याकुल उस बाजार में शामिल हो इस उम्र में क्या करना
किया जितना बन पड़ा जल-दान
अन्तिम परछन के क्षण अनन्त तक दिखता मलिन आसमान
औसत पेड़ों भूरे घुमावदार पत्थरों से जकड़े हैं तट

भादवीं रात के अथाहपन में स्मरण है
केवट बाँह उठा चिल्लाया किये
ठहरो, प्रतीक्षा करो, अभी नहीं
शिला-खंड के दर्प से टकराये कई जन कई बार
लहरों के धागे में उरझे लुप्त हुआ देह-स्वप्न
अस्वीकृति के पक्षधर नष्ट हुए प्रचंड ध्वनि-धार में
स्मृतियों से भरी रातें दुख देंगी बहुत दिन तक

कुछ भी नहीं लाता मौसम

मौसम नहीं लाता अपने साथ रेशम के फूल
भिंडी की महक सूरन के पत्तों की गंध
तारों से सुगंध चन्द्रमा का सौन्दर्य
क्षितिज के कजरौटे का काजल परिपक्व
गुप्त घाटियों में भटकी मूल्यवान हवा
शेर की दहाड़ हिरन की कातर दृष्टि
कुछ भी नहीं लाता मौसम अपने साथ

हवा से हवा कुछ और सुखद हवा को जोड़ता
सूरज की नरम किरनों को सहलाता
बहुरंगी पत्तियों के समीप
एक सुबह कुशल बाजीगर-सा
पराग-कण भुहराता दिख जाता है मौसम
गूलर के कठोर कचौंध फलों को उठा
चूमता. बरगद की जटाएँ पीपल की विशाल बाँहें
पल में बदल देता समय-पुस्तिका का अनुक्रम

दो-चार दिन बाद

तमाम चीजें चमक उठतीं बदले मौसम के पक्ष में
धूल में नहाती दिन भर नाचती सुगंधित हवा
लौटी बारात थके यात्री घमाये पशु
सुस्ताते हैं नदी-किनारे महुए की छाया में
प्यासे हरकारे लोटे में भर लेते शीतल जल
समझौते की तहत नेउर साँप के गाँव नहीं जाते

बाचाल बया के जोड़े
बाँस की कैनियों पर पंख फुला झूलते स्वच्छंद
अचकन में छिपी पिपिहरी बजा कुर-कुर झूमती हैं डालियाँ
मौसम के सितार से दिन-रात ढलता है अमंद रस

धनखरों के पार जहाँ रेहिल जमीन पर
बिखरी हैं कटिहीन पंखीनुमा घासें
थोड़ा पानी पी वे भी सँवरा लेतीं श्वेत केश
ग्रीष्म की तकलीफदेह घटनाएँ भुला
तने छत्तों के नीचे चीटियाँ चाटती हैं नुनखार मिट्टी

कौन यह टटोल रहा

सुबह की तरह सुबह हो रही
चिड़ियाँ झुरमुट के अँधेरे में शीश उठा बोल रहीं
धीरे-धीरे मैं उस शिखर तक पहुँच रहा
जहाँ क्षितिज-कपोल पर सोया है पूर्णिमा का रात्रि-पर्व
अभी कुछ क्षण पूर्व सरोवर-जल में मुँह धो
चीड़-वन में पहुँच गये हैं बाघ
तड़के धूप खिलने पर थर्रायेगा सारा जंगल

कोहरा हर भाँति सब तरफ से घेर रहा मुझे
कुछ कहना चाहता कानों से लिपट कर
हँसता है कंधे पर सिद्ध तांत्रिक के आकार में
कौन यह टटोल रहा पर्वत-वक्ष
साधनालिप्त ध्वनि-मूल का चिरंतन व्याख्याता

परिवर्तित हुआ कुछ पल में वायु-व्यापार
श्याम घन चिरौंजी के फूल की तरह उड़ रहे सामने
पट-बंद कंदराओं की ओर निहारता हूँ अपलक
जो अन्तिम नक्षत्र वह भी अदृश्य हुआ

दिवस को सर्वस्व अर्पित कर मुक्त हुई सुहागिन रात
व्योम-शिला के आवरण सात्विक नीलिमा से
बाँह उठा जैसे ही चाहा पूछना लघुत्तरीय प्रश्न
श्वेत कण झिर-झिर गीला करने लगे देह
मुट्ठियाँ खुली रह गयीं ठण्डी हवा के झमेले में

शिखर के लय में बुदबुदाता हूँ देर तक
ओ कोहरे ! बादलो !! श्वेतिमा के भव्य अलंकार
मैं आया हूँ मुक्त हो ध्वनि शब्द अर्थ पाने
समझने आनन्दवाद का तात्पर्य
हृदयंगम करने दृश्यावलि जो अनन्त का सूक्ष्म आभास

आओ समीप। उतरो पुतलियों की आड़ में
यह आत्मा भी विराट का अंश स्पर्शातीत
सुप्त इच्छाएँ उद्देश्यहीन नहीं होतीं
गगनान्त का जो मण्डप वहाँ भी प्रज्ज्वलित मन का दीया
मुझे संतोष की एक किरन-ही दो साँसों का विनम्र आधार

रात्रि-पर्व

लहरों का संगीत

वह व्यक्ति जो नेतृत्व के शिखर से देख रहा समय की गति
उसे पता ही नहीं किस ओर जाना रुकना कहाँ जल-पोत
सुन रहा समुद्र की बजती लहरों का संगीत
शान्त मंत्र-मुग्ध

नावों में सवार सिपाही किस्म के कुशल नाविक
जो अभी तक मनोहर दृष्यों में निश्चिन्त थे
मद्धिम प्रकाश का आभास पा चिल्ला पड़े
वह द्वीप उदधि-अंक में शिशु-सा खेल रहा
जिसकी तलाश में वर्षों से परेशान हैं हम
हजारों मणि-दीप चमक रहे ध्वज आलीशन

किन्तु शिखर व्यक्ति भू-गोल के अर्जित अनुभव
पत्री में अंकित अदृश्य प्रतीकों के उजास में
समझ रहा गूढ़ार्थ
अक्षांश-देशान्तरों के चतुष्कोण मध्याह्न का सूर्य
व्यतीत का चन्द्र-प्रकाश नक्षत्रों का उन्नत भाल
झंकृत सितार ध्वनि-सा वह उतर रहा शिराओं में

पूर्व संकेतों को टटोलता स्मृति के कटघरे में
डेक से उतर आये प्रहरीनुमा दो-चार बलिष्ट पुरुष
बाँह झिटक बिछा दिये कुछ विचार हवा में–
चमकीला श्वेत धुआँ दिख रहा जैसे कोई गाँव
हम सब का आखिरी पड़ाव होगा यहीं कहीं

ऊँचे स्वर में बताया उसने लगभग समीप हैं
कुछ गुलाबी चिड़ियाँ पंख फैला आयेंगी पोत पर
वही फल-फूल से लदे बगीचों का रास्ता दिखायेंगी हमें
समुद्र का प्रातःकालीन भजन सुनो
घंटे की मंद ध्वनि के साथ गा रहीं देव-कन्याएँ

मूँगे की दीवारों पर लेटी जल-गिलहरियाँ
पलट रहीं बिछौना
विलम्ब नहीं अब सूर्य के आगमन में
लहराता त्वरित गति से बढ़ रहा पोत अपरिचित
तट पर लंगर डाल उतरेंगे दस-पाँच टोही
देश जो पड़ोस में उसका इतिहास बदल सकता कुछ समय में

नदी का नागरिक जीवन

कठोर पत्थरों पर चमक रही गिद्ध -पंखों की छाया
पर्वत–पीठ पर उतरते नहीं कहीं
डुबकियाँ ले हवा की नदी में पोंछते हैं टोंट
डाँगर पशुओं के मृत्यु–महोत्सव
बूचरखाने की छत पर सूखती हड्डियाँ
दृष्टिहीन बिल्ली की आकस्मिक निष्प्राणता–
कहीं स्वाद का आकर्षण संताप नहीं
सूर्य–ताप में सूख रहे चितकबरे पंख

शहर के बगल से बह रही काले रंग में गदराई
उपेक्षित पंकिल एक पतली धारा
बगुलों के मटमैले पंख पर असहज नाच रहीं
कजरारे नयन पीली तितलियाँ
उतावली नदी वर्षों से ढो रही शहर का दर्प
सुबह के बातूनी लोग चर्चा छेड़ टहल रहे सड़क पर–
दिखेगा हल्का बदलाव शताब्दी के अन्त तक
शहर अभी सोया है वर्तमान के खण्डहर में

बूढ़े फकीरों का सम्प्रदाय लीक से हट बता रहा
नदी का जन्म इसी तरह होता है
हजार वर्ष लगता नदी को आकार लेने में
शक्ति–अर्जन के पूर्व गुजरना पड़ता अनेक डबरों से
तभी तो आदमी नहीं हो सकता नदी का स्वप्न
असमर्थ मूर्ति–सा सदैव वह दिखता खड़ा नदी के तट पर

धार जब कभी उफनती वर्षा के लय में
मलिन वस्त्र उतार कस लेती चमकीले केश
नाचती थोड़ा गाती लहरों के पक्ष में
वृक्ष की पत्तियों में उतर आती प्रीतिकर हरियाली
बस, इतना–ही शेष है नदी का नागरिक जीवन

सूख गया मौसम का कलेजा

खबरों के मुताबिक यह लगभग तैं था
मकड़ी के जाले नोच, अकारण जूझते लोगों का संघर्ष
खत्म हो जायेगा और शुरू होगा नये दिन का कारोबार
चौराहे पर बैठे बनियों का व्यर्थ ही नष्ट हुआ व्यापार

अनिर्णय की तहत बलवान आदमी आगे बढ़ तलाशता
सूर्य में कहाँ छिपा अंगार का पिघला रस
झाँखर में उरझे खरगोश को देख कगार से चिचियाता
कुछ क्षण पूर्व घायल हुआ अपराधी कुत्ता

बियाबान में गुम हुईं जो बकरियाँ तैरती दिखीं जल में
चरवाहे चकित–गहरे जल में खेल रहे बिच्छू
चकवड़ के तने लपेट गोजर सूंघ रहे मिट्टी की गंध
जल–कपि तट पर खोज रहे चावल का आखिरी कण
पिंजड़े से पलायित खुले में तड़फड़ा रहे पालतू तोते

समय करवट कब लेता पता नहीं व्यवस्था को
कुपित एक समुदाय अँधेरे में फोड़ता आग के गोले

शंकालु जन बंद दरवाजे पीट सुनते हैं कठोर धमाके
तर्कहीन बहस का ऐसे में अन्त नहीं होता– .
स्मृति नष्ट नेवले दौड़ रहे पीठ पर गन्ने की पत्तियाँ लपेट
हलबुल औरत भीड़ को सुनाती फिजूल की बातें
मिट्टी के घरौदों में छिपे लोग और क्या कर सकते
मीठे शब्दों में घुला ज़हर पी रहा ठण्डा समाज

खबरों से गुमराह जो चल रहे पर्वत की ओर
मजबूत पत्थरों पर ठोक रहे कील
सम्पत्ति परिवार और देह की सुरक्षा में
आदिम भूमि का परित्याग फिर न लौटने की वचनबद्धता
उम्मीद के विपरीत गुलाब के फूल से चू रहा गर्म जल
हवा ने झकझोर दिया सूख गया मौसम का कलेजा

औरत के खुले केश देख उछल रहा कोबरा
खुली छत पर पटकता सिर नयी शताब्दी के सीने पर
बंजारिन पिटने से पीटती आग का गोला
चिलम सुड़क बंजारा फेंटे से निकाल देता गिन्नियाँ
बंजारिन नहीं पूछती कोबरे से अगला सवाल

कसाई घर से गुजरते मल्लाह

उस रात मृत्यु के तमाम सम्बोध अनायास मिलते रहे
दरार से फन काढ़ चिरकती रही कुपित नागिन
नेत्रों के सम्मुख टूटते रहे अँधेरे के कवच
कगार से टपकते दिखे सड़े वीमत्स शव
अपरिचित आवाज सुन दौड़ चले चौकन्ने पशु
पीतल की चमक का कृत्रिम आभास
अंगारों से भरा आसमान उतर आया पृथ्वी पर
जहाँ आदमी पशु और हरे पेड़ जल रहे केवल

गर्दन की हड्डियाँ मत तोड़ो मजबूत भुजाएँ
चिल्ला रहा शानदार एक जीवित आदमी
जंजीर से बँधा हाँफता परेशान
घायल बाघ-सा तड़कता प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में
हत्यारे मौन, आदेश के आखिरी शब्द सुनाने के लिए

आदमी के धैर्य के खिलाफ क्या नहीं किया सबने
गोठिल तलवार भाँज तोड़ दिया पुष्ट शाखाएँ व्यर्थ
पेड़ की पत्तियाँ तलफती दिखीं घाटी में

चिड़ियों का उतावला समूह उड़ा दिशाहीन
समझा आयें तीसरी-चौथी दुनिया को
अकेला आदमी किस तरह तोड़ रहा पुष्ट पत्थर
जिस जमीन के निकट पहुँची चिड़ियाँ–
आदमी वहाँ दबोच रहा आदमी को दुष्ट भेड़िये-सा
चिड़ियाँ दो शब्द टाँक बैठ गयीं सूखी नदी की पीठ पर

उन सब के हाथों में अकूत बल था-गिरोहबंद
फिर-भी कसी मुट्ठियों में हिलती रहीं उँगुलियाँ
पड़ाव का दीया कितना सहारा दे विपरीत मौसम में
पुष्ट सरीपृप कीचड़ में उतिनते रहे लहरों का दर्प
नाव निकल गयी जो आई शव-दाह का प्रपंच लिए

कसाई घर से गुजरते मल्लाह हाथ मल बैठ गये
उस मड़ई के सामने जहाँ बुढ़िया माँज रही कड़ाही
दोने चाट चुके कुत्ते लेटे हैं इत्मीनान से
हर तरफ निगाह डाल बुढ़िया संसूचित करती–
यह जगह बीड़ी सुलगा सुस्ताने देर तक बैठने के लिए नहीं
भीतर जो रक्तपात हो रहा किसे पता मुल्क और संसद में

बिहँस रहा बदरिहा घाम

आधी रात से लगातार हो रही बारिश
पानी में मुँह धो लहलहा रहे मकई के खेत
पुरइन-पात पर चमकते जल के सधे कण
मोती की तेजस्विता ले कुछ कण ढुरक रहे
ताल के खजाने में

कुछ दिन पूर्व जो औरतें खेत में बेरन रोप
सम्पन्नता के गीत सुना लौट गयीं गाँव की ओर
झोंपड़े के द्वार से देख रहीं घूँघट के ओट में
झरते जल का स्नेह रस–
कार्तिक में निश्चित है मिलना अब नमक-भात

पक्षियों का झुंड जो आकाश-मार्ग से भींगता जा रहा
आँखें नचा देखता जड़हन के खेत
कटनी के मौसम में लौटना पुनः इसी बाट से
धान के छिटके दाने मिलेंगे पहाड़ तक
चमकते दाने कुटक तृप्त होंगे थके बच्चे

अल्प वृष्टि के प्रभाव में जो पेड़ खड़े उदास
पीपल पाकड़ जो पंखे झल मिटा रहे ताप
पसीना पोछ गूलर झाँकती थी जामुन की ओर
मुक्त सब भीग रहे वर्षा-जल में
टिप-टिप टपक रहा जल
पानी से खेल रहीं पेड़ से उतरी गिलहरियाँ

बहुत-सी चीजें हैं दुनिया में
जो मौसम के साथ खिल उठतीं अनायास
झुके पेड़ की करधनी बजती दोपहर बाद
आम के फलों पर बारीक सूत कात बैतालिन हँसती सुबह
जब स्याह पत्थरों के बीच से उठता कंदुक ज्यों सूर्य
बोलता है काग कठोर चट्टान के शीर्ष पर
धूप नहीं रुक पाती वर्ष भर पलाश के गाँव में

बच्चे नाच रहे दुआर पर बाग फुलवारी में
बीते व़र्ष जो घटित हुआ उसे भूल गये बच्चे
जल में हदें पार कर सपने बुनती हैं मछलियाँ
कछार के कीचड़ में कौवे मना रहे उत्सव
जल-दर्पण में बिहँस रहा बदरिहा घाम

भिनौखे के हल्के प्रकाश में

झालरनुमा झूल रहीं रश्मियाँ पूरब के द्वार पर
पिघल रहा नवारुण सूर्य का अमृत रस
नवेली एक दूल्हन
गुलाबी आँचल से पोछ रही मुख
मण्डप-पार्श्व में प्रभाती सुना मुग्ध हैं युवतियाँ
ईंगुरी रंग में नहाई जाने किस लोक से आईं ये
कुछ कहने के लहजे में झरोखे से झाँक रहीं युवतियाँ

ताल के उथले जल में छलाँगता लहरों को सूंघता
नास्तिक-सा कीचड़ को रौंद रहा मेढक
नहीं ज्ञात, वर्तुलाकार उठ रहा अदृश्य काल–
काँख में दबाये भूरी चट्टान
पर्वतों को अनेक बार डुबो चुका वह उफनते जल में

आकाश-गंगा के श्वेत अंक में
परियों को नृत्य प्रदर्शन से रोका नहीं जा सकता
महाशून्य में स्वर छेड़ने का अधिकार है उन्हें
यक्ष-गृहों में वाद्य-यंत्र नहीं बजते केवल

बजता है घूँघर अविराम
रागमुक्त सरल संगीत ब्रह्माण्ड का शाश्वत आह्लाद है

अन्नभरी बाजरे की बाल चोंच में दबा जो पक्षी उड़ा अभी
सूर्य के माथे पर लकीर खींच पहुँच गया उस दर पे
जहाँ पीले अंकुर देह में शक्ति भर हुमस रहे भविष्य के नाम

जब दुनिया किसी भोर में नये सूरज का उगना
महसूस करती या महासागर में अँखुवाता द्वीप
सम्भव यह भी कि पर्वत पर दिख जाय झूलती घाटी
तब आदमी आश्चर्य से निखारता सृजन के तर्क
विस्मय की दीवार पर बैठा गिरगिट बजाता नुकीले दाँत

यह जो दिख रहा
पवित्र सरोवर के कँकरीले तट के समीप
जल-दर्पण में उड़ते हारिल कुछ बुलबुल
अगहनी घास पर खेलती तूती चिड़ियाँ
धान की सूखी बाल को चाटते मटियर सुग्गे
भिनौखे के हल्के प्रकाश में कितना सुघर लगता है सब-कुछ

सुबह के झमेले में

नदी-तट के पेड़ों पर बैठे तीतर
अपनी भाषा में सुना रहे व्यतीत की कहानियाँ
कगार के शीर्ष पर नृत्यरत मोर को
झुरमुट से ताक रहा कुटिल श्रृगाल
विपुल जल-राशि में घड़ियाल के आतंक से कम्पित
साँप के बच्चे लहरों में देह छिपा
सरक रहे बंद खोढरों की ओर
बीमार नागिन शिला-खंड पर चुपचाप ले रही धूप
सुबह के झमेले में अनेक दृश्य उभर रहे नेत्र के सामने

नदी अक्सर सोचती सिर उठा
कहाँ गये चिड़ी के गोलहर बच्चे
जाड़े भर दिखे जो उथले में
खेलते रेत पर उछलते
कहीं और खिसक गये वे
गहरे जल में चमक रही मौत की छाया

संतो का मौन सम्प्रदाय

अँधेरी रात में निर्जन पगडण्डियाँ पार करता
अनुभूतियों में बुन रहा निराकार का आकार
जितना सुख, दुख उससे कुछ अधिक
जो व्यर्थ, बुद्धि-बल से क्यों जमा रहा आधिपत्य
कल जो विद्यमान वर्तमान में नहीं कहीं वह
काल भी स्वनिर्मित सूत्रों में गलता है यथासमय

नागफनी के व्यूह में अफना रहा अड़ियल विषधर
चूहों के घर में धँसा नेउर फुला रहा मुँह
आग में पानी, पानी में आग जल कहीं
एक का दर्प दूसरे से टकरा गया निरर्थक

तीतर जितना व्याकुल चपल बटेर झुरमुटों में
उनके स्वर-वेग से अधिक झल्लाई नदी
परस्पर संघात से जो नाद उपजा
चुटकी भर ले उड़ी चरखिन शेष लहरों में समाई
किसने थम कर देखा हवा में टूटते चिड़ियों के पंख

अगले पड़ाव तक

आदमी तब-तक तमाम बातें सोच चुका होता
जलते शव के सपीम जब तीन पीढ़ियाँ दिखतीं
पुष्प और अक्षत लिए संकल्पबद्ध उदास
जैसे अँधेरा-ही बचेगा सूर्यास्त के पश्चात्
घाटियों के मूल में दरकेंगी कठोर शिलाएँ
खूनी चकत्तों में गीली आँखों का अवसान
गुम्बद के बगल से उड़ जायेंगे व्याकुल तोते

धूम्र-सम्पदा के बोझ में कसमसाती तितलियाँ
उदास दरवाजों पर भूरी बिल्ली का प्रलाप
नहीं बचता थोड़ा भी प्रसंगवश
जिसे सम्हाल कर रखा जाय स्मृति के खजाने में
गुप्त प्रेक्षागृह के तहखानों में खो जाती हैं कुंजियाँ

यही है व्यक्ति के शतायु होने का पुरस्कार-
धाम-छाँह में दौड़-धूप संकलित करना अमूल्य निधियाँ
बिन सोचे एक दिन टूट जायेंगे हवा के बारीक तंत्र
पुतलियों में तैरती सुखद छबियाँ

जो साथ वे भी लुप्त होंगे उल्कापात के फरेब में
यह भी कि थोड़े समय के लिए बजेंगे नाना वाद्य
तबला बाँसुरी मृदंग मंजीर
चरैवेति के कोलाहल में कुछ न सुनेंगे कर्ण-कुहर
मिट्टी का पात्र मिट्टी के साथ कहीं और रचेगा आकार

ऐसा नहीं कि दिख रहा जो सामने प्रसन्नचित्त
नेत्रों में गुलाबी रेशे कस झाँक रहा नदी का उत्थान
किसी विकल्प के अधीन वह रचेगा इतिहास
पृथ्वी के अक्ष से खिचीं जो रेखाएँ त्रिभुजाकार
उनकी गति जल पृथ्वी और वायु में समान है संतुलित

प्रक्षेपित जीवन-प्रसंग में दिख रहा जो प्रकाश
धुंध अंधकार आकर्षण से भरा नील भाण्ड
पृथ्वी के हृदय में निर्लिप्त सम्पदाएँ
कत्थक -नृत्य से विमोहित भीड़
चम्पा-पुष्प के मोह में वृक्ष-तन को सहलाती प्रेमिका
अगले पड़ाव तक कुछ नहीं दिखता केवल उदास रेत
फिर उस चौबारे की रक्षा में क्या करना जो मटियामेट होने
आग में सुलग राख बनने के करीब है इस वक्त

वह द्वीप

तब-तक सारी भीड़
जो देह के आवरण की तरह उसे घेरे खड़ी थी
पखावज के अन्तिम ध्वनि ज्यों विलुप्त हो गयी
अकेला खड़ा रहा वह सूर्य-कान्ति को देखता हुआ

घन-कुंज में विद्युत-हास का सीमान्त आभास-
गुलाब की गीली पंखुड़ियाँ संघर्ष झेल चिहुँकती रहीं
श्वेत चट्टान पर समय की जमी धूल और कठोर हुई
ऐसे में समुद्र का मौन रहना स्वाभाविक था

वह द्वीप जो सागर-जल से घिरा-
सदियों से आदमी जहाँ तोड़ रहा स्याह पत्थर
तलाश रहे वहीं कुछ भूखे लोग
दराजों में हल्दी और मेथी की गंध
मकान के एकान्त से पलायित जन धूप का स्वाद ले
लताओं में पा रहे सृजन का आभास
कल जो सम्भावित प्रभात उसके उत्सव का संवाद

कालीमायुक्त भोर में
लहरों की क्रमबद्धता और गति पर नियंत्रण रख
लहराता-सा दौड़ता अल्पजीवी तूफान
नींद में डूबी मछलियाँ चूस रहीं लहरों की बाँह
बादलों के खिलाफ आवाज नहीं उठातीं भटकी तितलियाँ
जो हवा का विन्यास उसकी पकड़ कहाँ है जल के पास

खपरैल पर बैठी भूरी आँख वाली सौम्य चिड़िया
भीड़ के पिठासे पर देख रही
टँगी काली पट्टियाँ–
जो लिखा देश के मौसम के बिल्कुल खिलाफ था

अक़ेला वह दृढ़ संकल्प बहुत-कुछ कहने की तैयारी में
देर से जो कसमसा रहा
विचारों में निमग्न आदमी को जगा अनुकूल बना रहा
रबर के पत्तों की आवाज सुन नदी से कुछ पूछ रहा
लौटेगा समझ-बूझ दो-चार घड़ी बाद
जब नदियाँ पहाड़ के जल से भरी बहेंगी ऋतु के खिलाफ

प्रस्ताव जो पेश हुए

बहुत–सी चीजें
दुनिया में नहीं रहतीं एक साथ
जो आज हवा और जमीन के समझौते में
कल उनके होने की सम्भावना नहीं किसी तरफ से–

सूरन की गाँठ गोभी की चमक करैले का फूल
इमली की छीमी केले की घौद सरसों की महक
बथुए का साग करेमुए का जल में फैलाव
तेली के कोल्हू में नधे बैल
सब एक समय नहीं उठते हवा को साँस में भर कर

पत्तल में रखा बासी भात दोने में सूखी दाल
अदरख की चटनी आम का अचार सिरके का रस
बक्से में सिरजा कपड़ा धूप में सूखती रजाई
हाथ की छड़ी का कतई भरोसा नहीं
किसी एकान्त में छूट कर हो सकती है अलग

मालिक ने खुश हो जो दिया मुट्ठी भर दाम

रेल का किराया महाजन की चिट्ठी भाई का संदेश
ट्रेन छूटते वक्त जो सीटी बजी थरथराती
अगले समय में तमाम स्मृतियाँ छोड़ सकती हैं साथ

प्रस्ताव जो पेश हुए जनता के पक्ष थोड़ा विपक्ष में
तड़-तड़ मेजें पिटीं कर्कश आवाजें मुट्ठी भर
फिर वही जो अक्सर होता सदन के अन्तिम दौर में

वह मकान जिसे ध्वस्त करने की नीयत से
चले आ रहे बुलडोजर हाकिम हुक्काम चतुर लेखपाल
बीच रास्ते में ठहर जायेंगे किसी क्षण
कि उठ रही आपत्तिजनक आवाज–
जनता के खसरा-खतौनी में मकान एक आदमी का है

सुबह जो खबर छपी कई कॉलम में
बाट निरीक्षक जिन्हें घटतौल में देता चार्ज-शीट
सिपाही हौलदार को सुनाता फूहड़ शब्द
बेफिक्र तमोली जिस तरह घिसता समूचे पान पर चूना
सब अपनी ताकत भर हवा में उड़ा रहे धूल
चीजें और घटनाएँ किसी के वश में नहीं
हवा का जंगल में गुम होना भी खतरे का संकेत है

एक भूखा लड़का

बेवक्त की अप्रिय आवाज से घबड़ाना अच्छा नहीं
जरूरी है उस जमीन तक पहुँच कर डाल से चिपके
सशंकित गेदुरों के मौन का व्यंग्यार्थ समझना
जड़ से लिपटी चींटियों को सुरक्षित रखना
सम्भव है अकेले में चीख रहा हो आदमी मौत से जूझता
अलाव से छिटकी चिनगियाँ खत्म कर देतीं
खुशहाल जंगल का अस्तित्व
अनेक बार बीमार हुआ गाँव पता नहीं संकल्प

जो आदमी पिपिहरी बजा बैठ गया धान की मेड़ पर
सदाबहार के स्वच्छ पत्ते देख हँसता है बार-बार
फसल सूखी, बच रहे फिर भी स्वावलम्बी पौदे
जो उगे, अनचाहे बढ़े
उनका सूरज और घन-केतु से क्या रिश्ता
मौसम के प्रतिकूल हरीतिमा का सार्वजनिक प्रदर्शन

एक भूखा लड़का हड्डियाँ धँसी जिसकी मांस में
छिछनाता सिर के बिथुरे बाल

भसकी मार लोटता मसान की राख और माटी में
धिक्कारता कानून की किताबों का फालतूपन
लावारिश फुँकी जो पिता की लाश थी–
गर्दन घुमा पीटता बार–बार छाती
मसान का मालिक पूछता पुलिस से मिल आये हो !
डरावना शब्द सुन वह भाग जाता लाइन के पार

अक्सर होता यही जब आदमी कई पहाड़ नदियाँ
सूखे झरने कुछ घाटियाँ पार करता
पहुँचता है अधेड़ गाँव के समीप
सिर के बाल गठिया लोग मिलते जीवन से ऊबे
संत की तरह, खँखार कर थूक देते बहुत सी खबरें
जिनका बर्फीली ठण्ड भूख और मृत्यु से कोई मतलब नहीं
जंगल हो रहा माफियाओं का अभयारण्य

चीतल के खुर से कुचला सर्प फुफकारता व्यर्थ
बाँस की सुपेलियाँ चाट मिट जाता गीली मिट्टी में
अब नही डरता कोई नाग–वन की कन्याओं से–
शिखरों से चिपके वृक्ष जल रहे रात–दिन

यह समय

यह समय घर लौटने कुछ टहल करने का है–
घर जहाँ पिता व्यस्त हैं खेत जोतने हेंगाने
खेड़ी बिन जौ–गेहूँ की बुआई के इंतजाम में
माँ बथुए का साग खोट लौट रही घर की ओर
किताबें तहिया बच्चे तैयार होंगे स्कूल के लिए
मकई का दाना चबा बहन खेलती होगी आँगन में
अगवारे की चरन पर बैल बाँध
भाई जुटा होगा खरी–भूसा हरियर के जुगाड़ में

महाजन के बखार से निकले होंगे अन्न के कसे बोरे
चना मटर गोजई और भी जरूरी अनाज
डेढ़ी–सवाई में व्यस्त कार्तिक के दिन
जो मेहनत से बोये खायेगा वही वर्ष भर मौज से
बिल्लू के दुआरे बैठ देश–दुनिया की चर्चा चलायेंगे लोग
मुट्ठी भर आलोचना के कटु शब्द

दीवाली का त्यौहार बिल्कुल करीब है
दस–पाँच दिन और

कुम्हार टोला व्यस्त होगा मटकी खिलौना दीया
गणेश की मूर्ति सँवारने में
साल में यही थोड़े दिन कमाई के
नन्हकू सिर पर खाँच धरे दौड़ेगा पूरे गाँव में
लौटेगा दो-चार धरा मिलुआ अनाज पसेरी भर गुड़ बाँध
गाँव में जैसा होता सब जुटे होंगे अपने काम में

यह समय घर लौटने का है
दिन गिनते बाबा पड़े होंगे मचान पर अलग-थलग
वैद्य की दवाएँ निरर्थक हुईं बे-असर
करवट बदल सुनते होंगे पहाड़ से उतरती आवाजें
धान चुंगती चिड़िया से बातें कर संतुष्ट होंगे बाबा

रात्रि-पर्व

नदी जो कल-तक तप्त बालू से परेशान–
अचानक बदल गया रेत और पत्थरों का शिष्टाचार
अब वैसा कुछ नहीं नदी के दैन्य का बोध हो
खेप पर खेप कहीं से आ रहा उछलता जल
कगार की किर्चियाँ थाम उग रही कलोर घास

जेठ की तपिश से बौखला रहे उघार वृक्ष
जो कभी नीले लाल पीले फूलों से भरे समृद्ध
हाँफ रहीं शिलाएँ चरवाहों की गुल्लियाँ
बबूल के खुंझों से उलझी ऊँट की आँखें
बया सुमिर रही पंचाक्षर मंत्र
पशुओं की सूखी त्वचा से स्तब्ध हैं बहेतू कुत्ते

निष्ठुर मौसम के रात्रि-पर्व पर
थके माँदे घटवार दे रहे पहरा सुबह तक
नदी जाने कब घेर ले तराई का आबाद इलाका
सावधान ! कई बार चिल्लाया बूढ़ा मल्लाह
वैसे रात खूंखार होने से बच रही थी अभी

पहाड़ी सरोवर का बंधा दरकता जैसे-जैसे
नदी उसी अनुपात में डूब रही कमर तक
कुसमय के जल से पशुओं में नहीं है उत्साह
चिड़ियाँ ऊपर-ही-ऊपर उड़ जातीं आकाश में
नदी पार करने का खतरा मोल नहीं ले रहे बलिष्ट सुअर

बाँध जो पूरी ऊँचाई में खड़ा दूसरे पहाड़ की तरह
जहाँ अब भी मौजूद लद्दू घोड़े मजदूर ठीकेदार
पंक्तिबद्ध झोंपड़े धूल से सने बच्चे
ऐसा नहीं लगता जल फूट रहा चट्टान फोड़ कर
कठोर आवाज से घबरा गये हैं पड़ोस के गाँव
बारहसिंहे कुरेद रहे जड़दार पेड़ों की गीली मिट्टी

पतरौल जिलेदार चौकस कोतवाल जब-तक समझें
जमीन किस हद तक जल-भार से हो रही निरुपाय
पहाड़ का एक टुकड़ा टकराता दूसरे से
मस्त हाथी की तरह
वृक्षों से भरा जंगल बहता नदी की तेज धारा में
चीतल और हिरनों की उजड़ गयीं समृद्ध बस्तियाँ

बहुत कुछ देता है मौसम

वसंत का महीना आ गया पूरे सज-धज से
उतर रहा रंग उन फूल और पत्तियों में
जो खिलने हवा का संस्पर्श पाने के लिए
बैचेन हैं कब से–
सूरज की नरम किरनों ने खूब समृद्ध किया
नये मौसम का प्रथम दिन

पहाड़ से घिरे ऊबड़ में ठाट से जमे हैं पलाश वंतरी लताएँ
सुबह सिंदूरी रंग में चमक उठता पृथ्वी का भूरापन
सम्प्रदायवाद से मुक्त चिड़ियों का होता सम्मेलन
सांध्य स्कूल में आदमी को शिक्षित करेंगी चिड़ियाँ
बोली-बानी का भावार्थ सुन चकित होगा आदमी

तपे लोहे के ढब में उतर रही लजीली धूप
गुलाबी ठण्ड में औरतें घूँघट खोल
जा रहीं गेहूँ के तैयार खेतों की ओर
बिखरे डंठल बटोर लौटेंगी दोपहर ढलने तक
अतिथि चिड़ियों की भाषा समझती हैं औरतें

टुण्ड्रा टैगा की बर्फीली जमीन से
जो अनुभव लेकर आई हैं नीलकंठी चिड़ियाँ
झील-किनारे टीलों पर बैठ ले रहीं धूप का आनन्द
चीन ईरान मंगोलिया की चिड़ियों का ठसक कुछ और है
दिन भर चोंच फैला जल में टटोलती हैं नन्हीं मछलियाँ

मौसम के लिहाफ में छिपी पड़ी हैं अनेक तरह की चीजें
नयनाभिराम पुष्प, पंखुड़ियों में किसिम-किसिम के रंग
गुलाबी टहनियों में जड़ी सोने की जंजीर
पके फल सूखे मेवे का आखिरी खेप
बाँस के फूल जो मुस्कराते अरण्य में

टिड्डियों का समुदाय आता है मौसम के बीमार होने पर
चाट जाता आम महुआ बड़हल कचनार की लजीली पत्तियाँ
चम्पा चमेली का फूल जो कहीं होता पत्तियों की आड़ में
फितूरिन पंखुड़ी नोच भगदड़ के वक्त पहुँच लेती
बया के द्वार पर
समय अनुकूल होने पर आकाश को बहुत-कुछ देता है मौसम

जितना सम्भव बता दिया

कब से देख रहा ऊजड़ उद्यान के केन्द्र में
दीवार पर टँगी यह तस्वीर
आँख नहीं टिकी उस ओर कभी रेखाओं के आकर्षण में
भीड़ में बहस, बहस में भीड़ अलग-ही कुछ दृश्य
संसद में व्याख्यान दे अक्सर लौटते महापुरूष
एकान्त, इसी सुरक्षित पथ से होकर
किसी ने देखा नहीं रेखाओं में उभरती आकृतियाँ
इस मुकाम पर फिर-भी मुस्करा रहा औघड़-सा एक आदमी
उसे दिखता है शायद इतिहास का अतीत विस्मृत

नील रंग में तनी लाल मीनार के चतुर्भुज पर
स्थिर चित्त बैठे हैं चिड़ियों के अनगिनत जोड़े
देख रहे चमकते सूर्य की करधनी
और वह त्रिशूल जिसे बीती रात छोड़ गये बादल
क्षितिज-ताल में कंकड़ ज्यों लोट रहे लोहित कण
यात्रा के दौर में कोई छोड़ गया इन्हें तट पर

व्योम-शिल्पी ज्यों चोंच नें अपेक्षित रंग भर

समूह में उड़ रहे श्वेत कपोत
तैर रहीं कुछ तितलियाँ पुष्प-गंध की तलाश में
पेड़ की खुली जड़ पर सुस्ता रहा अधेड़ दुबला-सा आदमी
गेदुर की उड़ान देख मूँछ के नीचे सम्हाल देता सूखी हँसी
कुछ भी खास नहीं मुलुक में जिसे के निमित्त कहा जाय
चलो, राहत मिली साधारण जन को

असंख्य वस्तुएँ हैं इस वक्त देश में–
पुरानी इमारतें पुष्ट दीवारों में गौखे
हजारों चिड़ियाँ साथ उड़ती कवायत करतीं
दूर, किसी समृद्ध उद्यान में बाजे बजा
सुरक्षित छिप जाती हैं खुंथों में
चिड़ियाँ नहीं जानती इनके निर्माण और ध्वंस की कहानी

तमाम संकेत मिल रहे तस्वीर मूर्ति और कला से–
अभावग्रस्त भू-खण्ड किस तरह गुजार रहा दिन
कैसे शहर-नगर में केन्द्रित हो गया देह का वैभव
जुआरी लगा रहे दाँव पके आम खड़ी फसल के नाम
हिकमत से तकदीर बदल रहे माफिया किस्म के लोग
राह चलते आदमी को जितना सम्भव बता दिया
तस्वीर और मूर्ति ने

महुए के फूल

सुबह की रोशनी में टपक रहे महुए के पके फूल
नदी की आड़ में देह खुजला बिज्जू सूंघ रहे फूल
गाय बछड़े को दूध पिला झिटक रही पिछला पाँव
कौवे कूंच के फूल नोच चूस रहे रस
एक फूल उठा महोख बैठा है गुड़हल की डाल पर
आकाश में घिसट रहे कटे-फटे सफेद बादल
बच्चे कुछ ही देर में बिन लेंगे बिखरे फूल
खग-कुल गिलहरियों का खास लगाव नहीं इन फूलों से
देखते-सूंघते निकल जाते, मादक रस से भरा है फूल

कितना व्यस्त सूरज की रोशनी में चढ़ता दिन–
बूढ़ा पड़ोसी सिर पर खाँच धरे निकल गया खेत की ओर
बंजारे पशुओं के साथ जा रहे मेले में
हाँक रहे थके बैल गोलबंद
ढेरे के पेड़ से पत्ते सूंघ
ज्वार के खेत में निरर्थक कूद रहीं गिलहरियाँ
सूरज की रोशनी में अनेक दृश्य दिख रहे पृथ्वी पर

किरन एक जो बिछुड़ी मध्याह्न के वक्र पर
ठहर गयी लीची- लवंग के कपोल पर
केसर-कण उड़े महक उठा उद्यान आद्योपान्त
विचित्र श्रृंगार किये दौड़ रही एक भावुक चिड़िया
अनुभवी जल-चिड़ी पूछ रही उसके गाँव का पता
चिड़िया गर्दन उठा मुस्करा देती है केवल

ट्रेन से उतरे घरेलू यात्री छाँह में बैठ
दृष्टि से भाँप रहे कहाँ तक पसरी गाँव की पगडंडी
गेहूँ की बालें कितनी सूखी कितनी हरी हैं अभी
कंधे पर अधारी टाँग मजे-मजे चलेंगे वे गाँव की तरफ
जहाँ बाग में बुद-बुद अब भी चू रहे महुए के फूल